ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 46 | अंक 27 | पृष्ठ 08 | दयानन्दाब्द 200 | एक प्रति ₹ 5 | वार्षिक शुल्क ₹250 | सोमवार, 29 मई, 2023 से रविवार 04 जून, 2023 | विक्रमी सम्वत् 2080 | सृष्टि सम्वत् 1960853124 |
दूरभाष/ 23360150 | ई-मेल/ aryasabha@yahoo.com | इन्टरनेट पर पढ़े/ www.thearyasamaj.org/aryasandesh

महर्षि दयानंद सरस्वती जी की 200वीं जयंती के आयोजनों की श्रृंखला में दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा 10 दिवसीय वैचारिक क्रांति शिविर संपन्न

वनवासी आर्य कार्यकर्ता संगम समारोह में 13 राज्यों के 450 वनवासी कार्यकर्ताओं ने उत्साह से लिया वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार-प्रसार का संकल्प

राष्ट्र निर्माण के सेवा कार्यों को निरंतर आगे बढ़ाता रहेगा आर्यसमाज -सुरेंद्र कुमार आर्य

कोरोना के समय आदिवासी क्षेत्रों में किसी को भूखा नहीं सोने दिया, आर्य समाज ने -गुमान सिंह डामोर, सांसद

आर्यसमाज के अधिकारी, आर्य नेताओं, राजनेताओं और वैदिक विद्वानों ने दिया वनवासी युवा शक्ति को आशीर्वाद

आर्य समाज के मूल सिद्धांत और नियमों के अनुसार प्रत्येक मनुष्य एक ईश्वर की संतान है। अतः सबकी उन्नति प्रगति का एक ही संविधान वेद है। वैदिक ज्ञानधारा के अनुसार मानव मात्र जीवन यापन करे, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों को अपनाए, अपने जीवन के मुख्य लक्ष्य, उद्देश्य, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को प्राप्त करे, इसके लिए आर्य समाज निरंतर जन जाग्रति के लिए वैचारिक क्रांति की लहर चलाता आ रहा है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ पिछले 5 दशकों से देश के वनवासी हिस्सों में शिक्षा, चिकित्सा एवं मानव सेवा के विशेष प्रकल्प चला रहा है। इस क्रम में वहां गुरुकुल, कन्या गुरुकुल, आर्य विद्यालय, स्कूल, छात्रावासों के अलावा स्किल डेवलपमेंट के कार्यक्रम चलाकर आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में अहम भूमिका निभाने का महत्वपूर्ण कार्य कर रहा है।

मानव निर्माण के इस सेवा अभियान में संलग्न अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ पिछले 40 वर्षों से गर्मी की छुट्टियों में वैचारिक क्रांति शिविरों के माध्यम से वनवासी अंचलों से युवक, युवतियों को दिल्ली में आमंत्रित करके, उनके भोजन, आवास, भ्रमण सहित संपूर्ण व्यवस्था के साथ उन्हें वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों, सहित संध्या, हवन, भजन, प्रार्थना, उत्तम दिनचर्या आदि की संपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है। जिसके परिणामस्वरूप फिर

- शेष पृष्ठ 4 पर

वैचारिक क्रान्ति शिविर के समापन समारोह में वनवासी शिविरार्थियों को आशीर्वचन प्रदान करते हुए कार्यक्रम के अध्यक्ष सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी मंच पर उपस्थित धर्मपाल आर्य जी, डी.पी. अग्रवाल जी, सांसद गुमान सिंह डामोर जी, श्रीमती सुषमा शर्मा जी, भारतभूषण मदान जी, सत्यानंद आर्य जी, विनोद बंसल जी, श्रीमती संगीता सोनी जी, स्वामी शान्तानंद जी, सतीश चड्डा जी, आचार्य दयासागर जी, उपस्थित जन समूह एवं जस्टिस मेहर चंद जी के जीवन से जुड़ी सच्ची घटना पर आधारित नाटिका, आओ करें राष्ट्र आराधन, सबसे आगे होगें हिन्दुस्तानी तथा व्यायाम प्रदर्शन प्रस्तुत करते हुए शिविरार्थी कार्यकर्ता।

वनवासी आर्य कार्यकर्ता बनेंगे भारतीय संस्कृति के अग्रदूत -ओम बिरला, लोकसभा अध्यक्ष

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला जी के निवास पर आशीर्वाद कार्यक्रम के दौरान सामूहिक चित्र में वनवासी कार्यकर्ता एवं प्रेरणा देते हुए श्री ओम बिरला जी, अर्जुनदेव चडडा जी, विनय आर्य जी, जोगेन्द्र खट्टर जी एवं आर्य महानुभाव

25 मई 2023 को माननीय लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला जी के आवास पर सभी विद्यार्थियों का अभिनंदन और उत्साह वर्धन किया गया। श्री बिरला जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में वनवासी आर्य कार्यकर्ताओं को संदेश देते हुए कहा कि भारतीय वैदिक संस्कृति और आध्यात्मिक ज्ञान और वैदिक संस्कारों

- शेष पृष्ठ 8 पर

यज्ञ एवं वृक्षारोपण के साथ मनाएं विश्व पर्यावरण दिवस

नोट- पर्यावरण शुद्धि यज्ञ के बैनर सभा की वेबसाइट www.thearyasamaj.org से डाउनलोड करें। आप जहां पर्यावरण शुद्धि यज्ञ करें-कराएं वहां के फोटो-वीडियो व्हाट्सएप नं. 9540045898 पर अवश्य भेजें।

वेदवाणी-संस्कृत

मधुविद्या से मैं वर्चस्वती वाणी बोलूं

वेद-स्वाध्याय

अश्विना सारघेण मा मधुनाङ्क्तं शुभस्पती।
यथा वर्चस्वतीं वाचमावदानि जनाँ अनु॥
-अथर्व० 9 । 1 । 19

ऋषिः-अथर्वा ॥ देवता-मधुः॥ छन्दः-अनुष्टुप्॥

शब्दार्थ- अश्विना=हे अश्विनौ! **शुभस्पती**=हे दीप्ति के पालको! तुम अपने सारघेन **मधुना**=माक्षिक शहद से या सारभरे अमृत और मधुज्ञान से **मा**=मुझको **अंक्तम्**=अंजन कर दो, रमा दो **यथा**=जिससे कि मैं जनान् **अनु**=जनों के प्रति, जनता के अनुसेवन करने के लिए वर्चस्वतीं **वाचम्**=तेजस्वी वाणी को **आवदानि**=बोलूँ, बोल सकूँ।

विनय- हे युगल देवो! हे सर्वत्र ज्योति और रस के देने वाले दिव्य देवो! तुम नाना रूपों में जगत् को व्याप्त कर रहे हो। तुम मेरे अन्दर सूर्यशक्ति और चन्द्रशक्ति के रूप में कार्य कर रहें हो, तुम प्राण और अपान के रूप में भी मेरे शरीर का सेवन कर रहे हो। हे अश्विनौ! तुम सदा 'शुभस्पती' हो, दीप्ति के पालक हो, तेज के संरक्षक हो। इसलिए मैं तुमसे वाणी के तेज की याचना करता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं जनता की सेवा के लिए अपनी शारीरिक वाणी को, मानसिक वाणी को, आत्मिक वाणी को तेजस्वी, वर्चस्वी, ओजस्वी बना लूँ। तुम मधु के लिए प्रसिद्ध हो। यह स्थूल माक्षिक मधु, शहद भी तुम्हारी ही ज्याति और रस द्वारा बना हुआ होता है। इस शहद के सेवन से मैं अपनी स्थूल वाणी को तेजस्वी और बलवान् बना लूँगा, पर तुम्हारा असली मधु तो हमारे अन्दर है। तुम्हारी क्रिया द्वारा प्राण उठकर जब सिर में व्याप्त हो जाते हैं तो कपाल में जो तुम्हारा मधु झरता है, जिस सारभरे अमृत का हठयोगी लोग खेचरी मुद्रा में अपनी जिह्वा द्वारा आस्वादन भी करते हैं, उस अपने मधु से, हे प्राणापानरूपी अश्विनौ! तुम मेरे सम्पूर्ण शरीर को अंक्त कर दो, मेरे रोम-रोम को भर दो। इस प्रकार मधुसिंचित हो जाने पर निःसन्देह मेरी मानसिक वाणी ऐसी वर्चस्वती हो जाएगी कि तब मैं मनुष्यों में जो भाषण करूँगा वह उनके हृदयों का वेधन करता हुआ जाएगा और अवश्य असर पैदा करेगा, पर हे सूर्यप्राण और चन्द्रप्राणरूपी अश्विनौ! तुम जिस मधु के लिए प्रसिद्ध हो वह तो तुम्हारा मधुज्ञान है, तुम्हारी ज्ञान-सारभरी मधुविद्या है। उस तुम्हारे मधु द्वारा मेरा आत्मा जब तृप्त हो जाएगा तब तो मेरी वाणी में आत्मा बोलने लगेगा। उस समय मेरी आत्मा से निकलने वाले शब्द ऐसे ओजस्वी होंगे कि वे निःसन्देह मनुष्यों को हिला दिया करेंगे और उन्हें उचित कर्म में प्रवृत्त कर दिया करेंगे। इस सारघ मधु से सिंचित आत्मिक वाणी द्वारा ही, हे अश्विनौ! मैं जनों का सच्चा अनुसवेन कर सकूँगा, उनका सच्चा उपकार-साधन कर सकूँगा।

-:साभार:- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

संपादकीय

भारत को मिला नया संसद भवन

सभी देशवासियों को आर्य समाज की ओर से बधाई

28 मई 2023 को देश को नया संसद भवन आखिर मिल ही गया। नये संसद भवन के शिलान्यास से शुरू हुई राजनीतिक दलों की स्वार्थसिद्धि की सियासत इसके उद्घाटन समारोह तक अनवरत चलती रही और भारी भरकम विरोध के बीच इस ऐतिहासिक संसद भवन का उद्घाटन समारोह विधिवत संपन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य समाज की ओर से सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं। हम यहां पर पहले संसद भवन के उद्घाटन और सेंगोल की स्थापना पर बात करते हैं, विरोध की सच्चाई पर बाद में विचार करेंगे। लेकिन यहां पर सारे घटनाक्रम को गहराई से देखने पर ऐसा प्रतीत होता है कि यह विरोध केवल नये संसद भवन का नहीं बल्कि राष्ट्रवाद की भावनाओं का विरोध था। पर चलिए अब जो भी कुछ था वह भूतकाल में चला गया, हम वर्तमान की बात करते हैं। 28 मई 2023 को पीएम मोदी ने पूरे विधि-विधान से नये संसद भवन का शुभारंभ किया। नए भवन में लोकसभा में 888 और राज्यसभा में 384 सदस्यों के बैठने की व्यवस्था है।

नये संसद भवन के भव्य उद्घाटन समारोह की शुरुआत यज्ञ से हुई, जो करीब एक घंटे तक चली। हवन में मंत्रोच्चार के साथ पीएम मोदी ने आहुतियां दी और सर्वमंगल की प्रार्थना की। इस दौरान उनके साथ लोकसभा के सभापति ओम बिरला भी नए संसद भवन के उद्घाटन के लिए हो रहे हवन-पूजा में बैठे। तमिलनाडु से आए अधीनम संतों ने मंत्रोच्चार के साथ हवन की विधि पूरी कराई।

पीएम मोदी पूजन हवन के बाद सेंगोल के सामने दंडवत हुए। साथ ही, संसद भवन में सेंगोल की स्थापना के बाद पीएम नरेंद्र मोदी ने तमिलनाडु के विभिन्न अधीनम संतों का आशीर्वाद प्राप्त किया। देश के नए संसद भवन के निर्माण के लिए देशभर से सामग्रियों को जुटाया गया था। जैसे नागपुर से सागौन की लकड़ी, राजस्थान के सरमथुरा से सैंडस्टोन, यूपी के मिर्जापुर की कालीन, अगरतला से बांस की लकड़ी और महाराष्ट्र के औरंगाबाद और जयपुर से अशोक प्रतीक को मंगवाया गया था। धार्मिक अनुष्ठान के बाद अधीनम संतों ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को सेंगोल सौंपा, जिसे नए संसद भवन में स्थापित कर दिया गया।

पीएम मोदी जब सेंगोल को लोकसभा में स्थापित करने के लिए नए संसद भवन के अंदर पहुंचे थे। वह इस दौरान उत्साहित दिख रहे थे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नए संसद भवन के उद्घाटन समारोह पर 75 रुपये का नया सिक्का भी जारी किया। सिक्के पर नए संसद भवन का चित्र अंकित है। संसद की तस्वीर के ठीक नीचे वर्ष 2023 भी लिखा हुआ है। नई संसद में सर्वधर्म सभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी समेत सभी कैबिनेट मंत्री और अन्य राज्यों के सीएम समेत कई प्रतिष्ठित लोग मौजूद रहे। इस सर्वधर्म सभा में बौद्ध, जैन, पारसी, सिख समेत लगभग सभी मतों के धर्मगुरुओं ने अपनी-अपनी प्रार्थनाएं कीं और सर्वधर्म सभा का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला और पूरी केंद्रीय कैबिनेट मौजूद रही। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नए संसद भवन के उद्घाटन के बाद भवन के निर्माण में काम करने वाले श्रमिकों को सम्मानित भी किया।

पीएम मोदी ने इस पर अपने उद्बोधन में कहा कि नए रास्तों पर चलकर ही नए प्रतिमान गढ़े जाते हैं। आज नया भारत नया लक्ष्य तय कर रहा है। नए रास्ते गढ़ रहा है। नया जोश है, नई उमंग, नई सोच है। दिशा नई है। विश्वास नया है। पीएम मोदी ने कहा कि आज फिर एक बार पूरा विश्व भारत को भारत के संकल्प के दृढ़ता को भारतवासियों की प्रखरता, भारतीय जनशक्ति की जीजिविषा को आदर और उम्मीद के भाव से देख रहा है। प्रधानमंत्री ने कहा कि जब भारत आगे बढ़ता है तो विश्व आगे बढ़ता है। संसद का यह नया भवन भारत के विकास से विश्व के विकास का भी आह्वान करेगा। पीएम ने कहा कि आज इस ऐतिहासिक अवसर पर कुछ देर पहले संसद की नई इमारत में पवित्र सेंगोल की भी स्थापना हुई है। नए संसद भवन के बारे में पीएम मोदी ने कहा कि यह प्रतिष्ठित इमारत सशक्तीकरण, सपनों को हकीकत में

- शेष पृष्ठ 7 पर

हर भारतीय के भीतर कर्तव्य भाव को जागृत करेगा ये संसद भवन -प्रधानमंत्री, श्री नरेंद्र मोदी

> **"हम ऐसी आशा कर रहे थे कि 28 मई 2023 को नये संसद भवन के उद्घाटन के सुनहरे अवसर पर अच्छा होता कि सभी राजनीतिक दल लोकतंत्र के नए मंदिर में संवाद की नई धारा, लोक केन्द्रित विमर्श और लोकतांत्रिक मर्यादा के उच्च शिखर के पालन करने का संकल्प लेते हुए उद्घाटन कार्यक्रम में शमिल होते तथा विश्व को भारत के जीवंत लोकतांत्रिक मूल्यों एवं आदर्शो का सन्देश देते। लेकिन हमें लगता है कि विपक्ष द्वारा यह केवल नये संसद भवन और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का ही विरोध मात्र नहीं था, बल्कि नये संसद भवन से ज्यादा राष्ट्रवाद की भावनाओं का विरोध था। आर्य समाज की ओर से नये संसद भवन के उद्घाटन की सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं। ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है कि लोकतंत्र के इस मंदिर में हमारे जनप्रतिनिधि राष्ट्र निर्माण और मानव कल्याण की उन समस्त कल्पनाओं को साकार करें जिनसे भारत का मस्तक ऊंचा हो और हमारा देश अपनी विश्व गुरु की पहचान को पुनः प्राप्त करें।"**

संस्कार बोध

यज्ञोपवीत या जनेऊ

–पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय

क्रमशः गतांक से आगे

इन ऊपर के मन्त्रों से स्पष्ट होता है कि यज्ञोपवीत या जनेऊ का वेदों में विधान न बताना बड़ी भूल है। हमने ऊपर अथर्ववेद 9/1/24 वाला जो मन्त्र दिया है उसमें 'प्राचीनोपवीत' शब्द आया है। शतपथ ब्राह्मण में 'प्राचीनोपवीत' और 'यज्ञोपवीती' शब्द बहुत आया है। उदाहरण के लिए शतपथ काण्ड 2 के 6 अध्याय पहला ब्राह्मण देखिए। इसमें पितृयज्ञ का वर्णन है। इसमें दो प्रकार के कृत्य हैं। कुछ क्रियाओं में जनेऊ सामने करने की प्रथा थी। उसी को 'प्राचीनोपवीती' कहते थे। यदि जनेऊ या उपवीत का विधान वेद और ब्राह्मणों में न होता तो 'प्राचीनोपवीती' शब्द का क्या अर्थ होता?

गोपथ ब्राह्मण में गायत्री मन्त्र के द्वितीय पद की व्याख्या करते हुए 'व्रत' की महिमा इस प्रकार बताई गयी है।

व्रतेनवै ब्रह्मणः संशितो भवति,
अशून्यो भवति अविच्छन्नो भवति
अविच्छिन्नोऽस्य तन्तुः।
अवच्छन्नं जीवनं भवति॥

(गोपथ पूर्वभाग प्र० 1। कं० 35)

व्रत-पालन से ज्ञानी– अर्थात् व्रत से ब्राह्मण ज्ञानी हो जाता है, भरपूर हो जाता है। अखण्ड हो जाता है उसका जनेऊ खण्डित नहीं होता। उसका जीवन खण्डित नहीं होता।

यहां कहा गया है कि जो ब्राह्मण व्रत का पालन करता है उसी का 'तन्तु' अर्थात् जनेऊ (Sacred thread) खण्डित नहीं होता। उसी का जीवन पूर्ण समझना चाहिए। जनेऊ की महिमा कान पर चढ़ाने से नहीं किन्तु व्रत के पालने

> **"आर्यवीर दल दिल्ली प्रदेश द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रादेशिक सभा के तत्वावधान में डी.ए.वी. स्कूल साहिबाबाद, राजेंद्र नगर, गाजियाबाद (उ.प्र.) के प्रांगण में आयोजित दस दिवसीय आर्यवीर दल चरित्र निर्माण एवं आत्म रक्षा प्रशिक्षण शिविर के दौरान सैकड़ों आर्य वीरों ने यज्ञोपवीत धारण कर वैदिक धर्म संस्कृति और संस्कारों के अनुसार शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति का संकल्प लिया। आर्य समाज हमेशा से ही युवा शक्ति को चरित्रवान, संस्कारवान और राष्ट्रभक्त बनाने के लिए कृत संकल्प है। यहां पर वैदिक भावनाओं को आत्मसात करते हुए आर्य वीरों को आर्य समाज के नेतृत्व ने आशीर्वाद और शुभकामनाएं प्रदान की"**

से है। यही बात यहां बताई गई है। इसी ब्राह्मण के प्रपा० 2 की चौथी कण्डिका में है– उपनयेतैनम्। (गो० पूर्व० 2।4)

अर्थात् आचार्य को चाहिए कि वह ब्रह्मचारी का उपनयन संस्कार करेः–

मनुस्मृति में भी यही आशय है। देखिए–

उपनीय तु यः शिष्यं
वेदमध्यापयेद् द्विजः।
सकल्पं सरहस्यं च तमाचार्य प्रचक्षते॥

(मनु० 2/140)

जो ब्राह्मण शिष्य का उपनयन कराके वेद को कल्प और रहस्य आदि के साथ पढ़ाता है वही आचार्य कहलाता है।

ऐसा तो शायद ही कोई मनुष्य हो जो गृह्यसूत्रों में भी यज्ञोपवीत संस्कार के प्रतिपादन का निषेध करे क्योंकि यह संस्कार होता ही गृह्यसूत्रों में दी हुई विधि के अनुसार है। आश्वलायन गृह्यसूत्र में लिखा है–

''अष्टेमे वर्षे ब्राह्मणमुपनयेद्
गर्भाष्टमेवा। एकादशे क्षत्रियं।
द्वादशे वैश्यम्।''

(आश्व० गृह्य० 1/19)

अर्थात् ब्राह्मण का यज्ञोपवीत संस्कार आठवें वर्ष या गर्भ के आठवें वर्ष करे, ग्यारहवें वर्ष क्षत्रिय का और बारहवें वर्ष वैश्य का करें।

आपस्तम्बधर्मसूत्र में लिखा है–
उपनयनं विद्यार्थस्यश्रुतितः संस्कारः।

(आपस्तम्ब प्र० 1। कं०)

अर्थात् विद्या के इच्छुक का वैदिक संस्कार उपनयन है। यहां 'श्रुतितः' शब्द आया है। इससे विदित होता है कि आपस्तम्ब के मतानुसार वेदों में भी यज्ञोपवीत संस्कार की विधि है। आपस्तम्ब ने किस वेद मंत्र के आधार पर ऐसा कहा यह कहना कठिन है क्योंकि प्राचीनकाल में जब वेदों का पठन-पाठन भली-भांति प्रचलित था। सभी जानते थे कि अमुक वेदमन्त्र अमुक बात का प्रतिपादन करता है।

गोभिलीय गृह्यसूत्र तो विस्तार के साथ देता है–

दक्षिणां बाहुमुद्धत्य शिरोऽवधार्य
सबयेंऽसे प्रतिष्ठापयति।
दक्षिणां कक्षमन्वलम्ब्य भवत्येवं
यज्ञोपवीती भवति॥

(गो० गृह्य० प्रपा० 1, कण्डिका, मन्त्र 2)

अर्थात् दाहिनी भुजा को उठाकर शिर के ऊपर से बायें कंधे पर, दाहिनी बगल में जनेऊ डाला जाता है।

यह तो हुआ उन लोगों के लिए जो कहते फिरते हैं कि वेदादि शास्त्रों में यज्ञोपवीत संस्कार का ढकोसला नहीं है, यह पीछे के लोगों ने मिला दिया है।

-क्रमशः अगले अंक में...

स्वास्थ्य संदेश

उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है तनाव मुक्ति

आधुनिक परिवेश में तनाव एक ताकतवर समस्या बनकर मानव समाज में लगातार फैल रहा है। हालांकि एक सीमा तक जीवन विकास के लिए तनाव आवश्यक भी है लेकिन अधिक मात्रा में तनाव उत्पन्न हो जाए तो यह एक भयंकर बीमारी का रूप ले लेता है और इससे अनेक जानलेवा बीमारियों का जन्म हो जाता है। मनोचिकित्सकों का मानना है कि लगातार तनाव पूर्ण जीवन जीने वाले लोगों को ब्लड प्रेसर, मधुमेह, हार्ट और अनेक अन्य असाधारण बीमारियां घेर लेती हैं। क्योंकि मनुष्य जैसा सोचता है, करता है वैसा ही उसका जीवन बन जाता है। तनाव के कारण मनुष्य की सोच ही नकारात्मक हो जाती है। अगर कोई व्यक्ति उसके लिए अच्छा भी सोचता है, करता है तो उसे उस पर सरलता से विश्वास नहीं होता और तनाव से भरा हुआ व्यक्ति अपने शुभचिंतक से भी भयभीत होने लगता है। ये व्यक्ति उसकी प्रशंसा करे, उसके लिए अच्छा बोले, उसके नकारात्मक स्वभाव को बदलने का प्रयास करे तो भी तनाव से भरे हुए व्यक्ति को यही लगता है कि यह मेरे खिलाफ साजिश कर रहा

> **"तनाव के समय शरीर में जो रासायनिक स्राव या भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है, उससे शरीर और मन में बचैनी उत्पन्न होने लगती है। तनाव का सबसे ज्यादा प्रभाव मनुष्य के दिमाग पर पड़ता है। उसकी सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होने लगती है। आदमी अपने और पराए को समझने में गलती करने लगता है। उसे अच्छी बात भी बुरी लगती है और बुरी बात अच्छी और फायदे वाली लगने लगती है।"**

है, इसमें जरूर इसकी कोई चलाकी है। दिखाने के लिए ये मेरे लिए कुछ अच्छा करना चाहता है लेकिन अंदर से तो मेरा बुरा चाहता है। क्योंकि तनाव के समय शरीर में जो रासायनिक स्राव या भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न होता है, उससे शरीर और मन में बचैनी उत्पन्न होने लगती है। तनाव का सबसे ज्यादा प्रभाव मनुष्य के दिमाग पर पड़ता है। उसकी सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होने लगती है। आदमी अपने और पराए को समझने में गलती करने लगता है। उसे अच्छी बात भी बुरी लगती है और बुरी बात अच्छी और फायदे वाली लगने लगती है।

तनाव के प्रकार

तनाव के कई प्रकारों में शारीरिक तनाव की एक अवस्था यह भी है कि जब किसी मनुष्य के मन में इस बात का भय हो कि कोई व्यक्ति या कोई चीज़ उसे शारीरिक रूप से चोट पहुंचा सकती है, तब उसका शरीर स्वाभाविक रूप से किए गए एक्सन पर पूरा रिएक्सन करता है ताकि वह उस खतरानक परिस्थिति से उबर कर जीने में सक्षम हो जाए या पूरी तरह से उससे पलायन ही कर जाए। यह जीवन रक्षक रूप का तनाव है।

भावनात्मक तनाव

सब कुछ मनुष्य के मनचाहा कभी नहीं होता। अनेक बार अनचाहा और विपरीत वातावरण में मनुष्य को एडजेस्ट करना आना ही चाहिए। प्रायः जब हम ऐसी चीज़ों के प्रति डर जाते हैं।

-क्रमशः अगले अंक में...

पृष्ठ 1 का शेष

दीप प्रज्वलन करते हुए सर्वश्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, डी.पी. अग्रवाल जी, सुषमा शर्मा जी, धर्मपाल आर्य जी, स्वामी शान्तानंद जी, गुमान सिंह डामोर जी, विनोद बंसल जी, इस अवसर पर श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी, गुमान सिंह डामोर जी, डी.पी. अग्रवाल जी, सुषमा शर्मा जी, भारतभूषण मदान जी, विनोद बंसल जी, सत्यानंद आर्य जी को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए धर्मपाल आर्य जी, जोगेन्द्र खट्टर जी, विनय आर्य जी, उषा किरण कथुरिया जी, राकेश आर्य जी, सुरेश चन्द्र आर्य जी, ओमप्रकाश आर्य जी, सुखवीर सिंह, विरेन्द्र सरदाना जी, संतोष शास्त्री जी, सतीश चडडा जी।

यही बच्चे भारत के वनवासी क्षेत्रों में दूसरे बच्चों को संस्कारित करते हैं, और इस तरह से एक ऐसी वैचारिक क्रांति की लहर चल रही है। जिससे समाज का हर वर्ग लाभान्वित होकर देश का सभ्य नागरिक और राष्ट्र भक्त बन रहा है।

गत वर्षों की भांति इस वर्ष यह वैचारिक क्रांति शिविर 19 से 28 मई 2023 के बीच दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सहयोग से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें भारत के 13 वनवासी राज्यों से 450 आर्य युवक, युवतियों ने भाग लिया, 19 मई को शिविर का विधिवत उद्घाटन हुआ, जिसमें आर्य समाज के शीर्ष नेतृत्व सहित अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य केंद्रीय सभा के सभी अधिकारियों ने बच्चों को आशीर्वाद दिया।

इस शिविर में सहभागी सभी आर्य कार्यकर्ता बच्चों की आदर्श दिनचर्या, योगासन, प्राणायाम, व्यायाम, संध्या, हवन, बौद्धिक, शास्त्र परिचय, राष्ट्र भक्ति, वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों की शिक्षा के साथ भजन, संगीत आदि की कक्षाएं नियमित रूप से चलाई गई । इसके लिए आर्य समाज के सुयोग्य विद्वान श्री जीववर्धन शास्त्री जी, आचार्य श्री दयासागर जी, श्री शरद जी इत्यादि महानुभावों ने पूर्ण पुरुषार्थ कर महत्वपूर्ण योगदान दिया। शिविर की संपूर्ण व्यवस्थाएं दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी और दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी के निर्देशन में सुचारू रूप से गतिशील रही। जे.बी.एम. ग्रुप के चेयरमैन एवं दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी का मार्गदर्शन भी लगातार मिलता रहा। इसके अतिरिक्त आर्य समाज रानी बाग के अधिकारी, कार्यकर्ता और सदस्यों का हर प्रकार से सहयोग करना प्रशंसनीय है। बच्चों को दिल्ली के ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण भी कराया गया, सभी बच्चे शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वयं को गौरवान्वित और लाभान्वित अनुभव कर रहे थे, सभी के मन सुमन और चेहरे प्रेम प्रसन्नता से चमक रहे थे। यह ज्ञातव्य है कि दिल्ली जैसे महानगर में एक दो अतिथि भी किसी के यहां दो चार दिन तक ठहर जाएं तो घर की व्यवस्था हिल सी जाती है, लेकिन आर्य समाज परिवार महर्षि दयानंद जी की अमर वाटिका है, इसलिए तो वनवासी अंचलों से आए 400 बच्चों के इस 10 दिवसीय शिविर में सभी दानी महानुभावों के सहयोग से बहुत सुंदर तरीके से शिविर की संपूर्ण व्यवस्था आदर्श प्रस्तुत करती रही, इसके लिए दयानंद सेवाश्रम संघ की और सभी सहयोगी महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद भी ज्ञापित किया गया।

27 मई 2023 को सायं 4 से 7 बजे तक केदारनाथ साहनी ऑडिटोरियम सिविक सेंटर के प्रांगण में इस रचनात्मक शिविर का भव्य समापन समारोह संपन्न हुआ। जिसमें अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी की अध्यक्षता में, मुख्य अतिथि, झाबुआ क्षेत्र, मध्यप्रदेश के सांसद श्री गुमान सिंह डामोर, दिल्ली सभा के प्रधान, श्री धर्मपाल आर्य, टी.सी.आई. कंपनी के स्वामी श्री डी. पी. अग्रवाल, श्रीमती सुषमा शर्मा, विश्व हिन्दू परिषद के प्रवक्ता श्री विनोद बंसल, बीजेपी के नेता श्री भारत भूषण, श्रीमती संगीता सोनी, श्री जोगेंद्र खट्टर एवं अनेक अन्य महानुभावों ने आर्य वनवासी कार्यकर्ता संगम समारोह में उपस्थित शिविरार्थी कार्यकर्ताओं को आशीर्वाद दिया।

कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री, ईश्वर स्तुति प्रार्थना उपासना, मंत्रों के उच्चारण से प्रारंभ हुआ। वनवासी आर्य कार्यकर्ताओं के रूप में 10 दिन तक प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले युवक, युवतियों ने करें राष्ट्र आराधन, सबसे आगे होंगे हिंदुस्तानी, धर्मांतरण के इतिहास पर जागरूक करने वाली प्रेरक नाटिका और जस्टिस मेहर चंद महाजन के बचपन के झूठे ज्योतिष के प्रभाव पर आधारित नाटिका प्रस्तुत कर आर्य समाज के गौरवशाली इतिहास से सबको परिचित कराने का कार्य किया। इसके उपरांत उपस्थित महानुभावों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ किया। मंच पर उपस्थित सभी अतिथियों का अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी, महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, आचार्य श्री दया सागर जी, श्रीमती संगीता सोनी जी, दिल्ली सभा और केंद्रीय सभा के अधिकारियों द्वारा अभिनंदन किया गया। शिविर में प्रशिक्षण देने वाले आचार्य दया सागर, श्री शरद चन्द्र, श्री राजवीर शास्त्री, श्री अनिल शास्त्री, श्री संतोष आर्य, श्री संजय पाढी, श्री रामप्रकाश जी, श्री राधे श्याम जी, श्री सुनील शास्त्री, सुमेधा आर्या, श्री प्रहलाद आर्य इत्यादि को संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने प्रशस्ति पत्र प्रदान किए।

इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के प्रवक्ता श्री विनोद बंसल जी वनवासी क्षेत्रों की प्राचीन स्थिति और वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ वहां पर हर तरह से कल्याण कारी योजनाएं सफलता पूर्वक चलाई जा रही हैं। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित श्री गुमान सिंह डामोर जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि वनवासी क्षेत्रों में धर्मांतरण एक बहुत बड़ी बीमारी है। वहां पर आर्य समाज के सेवा कार्य प्रशंसनीय है। थांदला, भामल और झाबूआ आदि क्षेत्रों में आर्य समाज के शिक्षण संस्थानों को मैंने स्वयं जाकर देखा है, वहां पर मानव निर्माण के कार्य बड़ी सफलता पूर्वक चल रहे हैं। आर्य समाज जहां शिक्षा सेवा के क्षेत्र में निरंतर कीर्तिमान स्थापित कर रहा है वहीं जब कोरोना काल में लोग भोजन के लिए परेशान थे तब आर्य समाज ने झाबूआ के अंदर किसी को भूखे नहीं होने दिया। आज मैं आर्य समाज द्वारा वैचारिक क्रांति शिविर में आए सभी शिविरार्थी कार्यकर्ताओं को शुभकामनाएं देता हूं आयोजकों को इस रचनात्मक कार्य के लिए बधाई देता हूं।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी ने उपस्थित सभी महानुभावों का नाम लेकर आभार व्यक्त करते हुए शिविरार्थियों सहित उनके माता-पिताओं का भी धन्यवाद किया जिन्होंने आर्य समाज के आमंत्रण पर अपने बच्चों को संस्कार प्राप्ति हेतु दिल्ली भेजा। आपने कहा कि आर्य समाज राष्ट्र निर्माण के कार्यों को लगातार आगे बढ़ा रहा है, विभिन्नता में एकता का संदेश दे रहा है और महर्षि दयानंद सरस्वती के संदेश को जन-जन तक पहुंचा रहा है। आदिवासी क्षेत्रों में जहां षड्यंत्रकारी लोग भोले-भाले लोगों को प्रलोभन देकर या डराकर धर्म परिवर्तन के जाल में फंसाते हैं वहां आर्य समाज शिक्षा, चिकित्सा, स्वावलंबन, कौशल के कार्यक्रमों से नयी क्रांति कर रहा है। आपने श्री गुमान सिंह डामोर जी का ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा कि आप

- शेष पृष्ठ 7 पर

सामूहिक चित्र में आगंतुक अतिथि महानुभाव, दयानंद सेवश्रम संघ, दिल्ली सभा और आर्य केन्द्रीय सभा के अधिकारीगण एवं शिविर के संचालन में सहयोगी आर्य समाजों के अधिकारी एवं आर्य नर-नारी।

अ. भा. दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित असम के विभिन्न शिक्षण संस्थानों का

पूर्वोत्तर के प्रधान दीनदयाल गुप्त, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार, विनय आर्य, जोगेन्द्र खट्टर, अजय गोयल ने किया दौरा

अधिकरियों द्वारा निरिक्षण एवं विद्यार्थियों के उत्साह वर्धन के कार्यक्रम संपन्न

आर्य समाज भारतीय वैदिक संस्कृति, संस्कृत और संस्कारों के संरक्षण तथा संवर्धन के लिए सदैव कृत सकंल्प है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि देव दयानंद सरस्वती जी की पावन प्रेरणा से प्रेरित आर्य समाज ने अपने 148 वर्षों के इतिहास में राष्ट्र एवं मानवसेवा के अनेकों कीर्तिमान स्थापित किए हैं। मानव सेवा के इस वृहद क्रम में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा इकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ भारत के आदिवासी अंचलों असम, नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, झारखंड, बिहार, उत्तरप्रदेश, गढ़वाल आदि में अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ को लगभग पांच दशक से ज्यादा सेवा कार्य कर रहा है। दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा इन सभी आदिवासी क्षेत्रों में 100 से ज्यादा बालवाड़ी और बड़े स्तर आर्य विद्यालय शिक्षण संस्थाओं के रूप में गतिशील हैं और नये विद्यालयों के भव्य निर्माण हो रहे हैं।

दीमापुर पहुंचने पर आर्यनेता सर्वश्री दीनदयाल गुप्त जी, जोगेन्द्र खट्टर जी, विनय आर्य जी एवं डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी का स्वागत करते हुए क्षेत्रीय आर्य कार्यकर्ता।

एम.डी.एच. आर्य विद्या निकेतन धनशिरी में दीप प्रज्वलित करते हुए तथा छात्र-छात्राओं के साथ सामूहिक चित्र में डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी, जोगेन्द्र खट्टर जी, विनय आर्य जी, अजय गोयल जी, संदीप अग्रवाल जी, अध्यापक, अध्यापिकाएं।

बोकाजान स्थित आर्य विद्या निकेतन के वार्षिकोत्सव पर विद्यार्थियों को स्टेशनरी, स्कूल बैग वितरित करते हुए सर्वश्री दीनदयाल गुप्त जी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी, जोगेन्द्र खट्टर जी एवं सामूहिक चित्र में छात्र-छात्राएं तथा सी.आर.पी.एफ. के अधिकारीगण एवं आर्य महानुभाव।

डिब्रूगढ़ एवं जाफराजान के छात्र-छात्राओं को स्कूल बैग एवं स्टेशनरी प्रदान कर प्रोत्साहित करते हुए डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी, विनय आर्य जी, जोगेन्द्र खट्टर जी, संदीप अग्रवाल जी इत्यादि महानुभाव।

ओम प्रेम सुधा आर्य विद्या निकेतन के वार्षिकोत्सव पर विद्यार्थियों को गिफ्ट देते हुए, श्री अजय गोयल जी, श्री संदीप अग्रवाल जी को स्मृति चिन्ह एवं पारंपरिक भेंट देते हुए अध्यापिकाएं तथा सामूहिक चित्र में सर्वश्री दीनदयाल गुप्त जी, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार जी, जोगेन्द्र खट्टर जी, विनय आर्य जी एवं आर्य महानुभाव।

अभी पिछले दिनों अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ पूर्वोत्तर राज्यों के प्रधान श्री दीनदयाल गुप्त जी के नेतृत्व में श्री विनय आर्य जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी, श्री संदीप अग्रवाल जी, श्री अजय गोयल जी, आर्य समाज के वैदिक विद्वान और गुजरात के महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के ओ.एस.डी. श्री राजेन्द्र विद्यालंकार जी ने दीमापुर, बोकाजान, जाफराजान, सरूपथार, धनशिरी आदि विद्यालयों का निरीक्षण किया और वहां पर पढ़ने वाले सभी विद्यार्थियों को स्टेशनरी, पुस्तकें और स्कूल बैग आदि प्रदान कर उनका उत्साह वर्धन किया।

आर्यसमाज के सभी अधिकारी, महानुभावों का दीमापुर पहुंचने पर श्री संतोष आर्य, श्री रवि आर्य, राजवीर शास्त्री, वासुदेव शास्त्री इत्यादि कार्यकर्ताओं ने स्वागत किया है और इसके उपरांत दीमापुर में संचालित विद्यालय के निर्माण कार्य का निरीक्षण करते हुए सभी अधिकारियों ने बच्चों को स्कूल बैग, स्टेशनरी का सामान वितरित करते हुए आगे बढ़ने और ऊंचा उठने की प्रेरणा प्रदान की। श्री दीनदयाल गुप्त जी ने अपने हाथों से बच्चों को स्टेशनरी का सामान वितरित किया।

ओम प्रेम सुधा दयानंद आर्य विद्या निकेतन बोकाजान, असम का वार्षिकोत्सव संपन्न

ओम प्रेम सुधा दयानंद आर्य विद्या निकेतन जो कि श्री ओमप्रकाश गोयल जी के सहयोग से निर्मित किया गया है। उनके सुपुत्र श्री अजय गोयल जी भी साथ में थे, सभी अधिकारियों ने ओम प्रेम सुधा आर्य विद्या निकेतन के वार्षिक उत्सव के अवसर पर उपस्थित विद्यार्थियों और अध्यापक, अध्यापिकाओं को प्रोत्साहित करते हुए आर्य समाज के सिद्धांत, मान्यता और परंपराओं के विषय में विस्तार पूर्वक बताया और बच्चों को सर्वांगीण विकास की शिक्षा प्रदान की। इस अवसर पर श्री अजय गोयल जी और संदीप अग्रवाल जी को श्रेत्रीय पारंपरिक भेंट देकर सम्मानित किया गया।

बोकाजान में स्थित आर्य विद्या निकेतन में वार्षिक उत्सव के अवसर पर आर्य महानुभावों के अतिरिक्त सी. आर.पी.एफ. के डी.आई.जी. श्री रावत जी, एग्जीक्यूटिव मजिस्ट्रेट और सभी छात्र छात्राओं के अभिभावक उपस्थित थे। इस अवसर पर बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए श्री दीनदयाल गुप्त जी, विनय आर्य जी, जोगेंद्र खट्टर जी, अजय गोयल जी और संदीप अग्रवाल जी सहित सभी आर्य अधिकारियों ने बच्चों को शारीरिक मानसिक और आत्मिक रूप से बलवान बनने की प्रेरणा दी और शिक्षा का महत्व समझाया।

जाफराजान में चल रहे विद्यालय निर्माण कार्य का निरीक्षण किया गया और उसके बाद में एम.डी.एच. दयानंद आर्य विद्या निकेतन धनशिरी में भी बच्चों को किताब, कॉपी, स्टेशनरी और बैग आदि वितरित कर सफलता के सूत्र प्रदान किए गए। उपरोक्त कार्यक्रमों में विशेष रुप से दीनदयाल गुप्त जी को अपने बीच पाकर समस्त विद्यार्थी और स्टाफ प्रसन्नचित था। विद्यार्थी उमंग, उत्साह और उल्लास से भरपूर दिखाई दिए।

Vegetation, Creatures and Man on Earth

Continuing the last issue

On the subject-matter of creation and advent of man on this earth, the Purush hymns of the Vedas and several other Vedic verses here and there -supply full information. Some are noted hereunder :—

1. 'Later appears the visible (solid and shapely) earth'—Rigved, 10.90.5; Yajurved, 31.5; Samaved, 1.6(3).4.7; Atharvaved 19.6.9 ("Pashhchaadh-bhooniim-athho purah").

2. 'By that Worshippable and All-Glorifiable are brought into existence the usable liquids and the fatty vegetation. He creates those animals, which are wind-speeded, wild and .domisticable'—Rigved, 10.90.8; Yajurved, 31.6; Atharvaved, 19.6.14

3. 'Verily, the Creator of the universe creates (first) the luminous fire-balls (suns), thereafter appear, secondly, the smell-bearers (solidified earth and other planets and satellites), thirdly, the Creator creates vegetation, and the Protector of all (finally) brings about creation of the expansive (multitifarious) creatures'—Yajurved, 17,32

4. 'By Him are created horses and those that have both side (upper and lower) jaw teeth. Verily, by Him are created cows. By Him are created goats and the like'—Rigved, 10.90.10; Yajurvecb, 31 8; Atharvaved, 19.6.12

5. 'Mankind that has been created'—Rigved, 10.90.11; Yajurved, 31.10; Atharvaved, 19.6.5 (" Ya th-purusham vyadhadhhuh").

6. 'By Him are created those who are the bright (men brilliant in artistic production and embellishment), the tough (compact-bodied men) and the seer (thoughtful men)'—Rigved. 10.90.7; Yaturved, 31.9; Atharvaved, 19.6.11 with "Vasavah" for "Rishayah" ("Thena dhevaa ayajantha 'saadhhyaa rishayashlicha ye").

7. 'Those the Effulgent Divinity created glorious (seers) spread knowledge all round' ("The angirasah soonavasthe agneh pad jajnnhire")—Rigved, 10.62.5

8. 'Those, who are the Effulgent Divinity created (original Seers), splendid-faced, highest reached, new (fresh) emitter (of the Vedic knowledge), controller of the ten senses and most glorious, spread knowledge all round and become great together amongst the noble'—Rigved, 10.62.6

9. 'Through the twofold principles of generation (Pran) and conception (Rayi) are brought forth (procreated) the two-sexed (male and female) human beings'—Yajurved, 9.31 ("Ashhvinau dhvyaksharenha dhvipadho manushyaan-udha-jayathaam").

आर्य समाज राजेंद्र नगर द्वारा 71वां वार्षिकोत्सव संपन्न

आर्य समाज राजेंद्र नगर द्वारा आयोजित 71 वें वार्षिकोत्सव का समापन 30 अप्रैल 2023 को समारोह पूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर सामवेदीय यज्ञ, वेद प्रवचन, आर्य महिला सम्मेलन, बाल सम्मेलन, छात्रवृत्ति वितरण इत्यादि विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन सभी कार्यक्रमों में आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान डॉ. महेश विद्यालंकार, डॉ. शिवदत्त पांडेय, आचार्य भानु प्रकाश, डॉ. श्रीमती चंद्रप्रभा शास्त्री जी, आर्य नेता श्री आनंद चौहान, श्री अजय सहगल जी, श्री अशोक सहगल जी, श्री राज बजाज, डॉ. देवेंद्र राय इत्यादि प्रमुख थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष आचार्य गवेंद्र शास्त्री जी रहे। आर्य समाज के समर्पित वरिष्ठ आर्यजनों का अभिनंदन किया गया। जिनमें डॉ. देवेंद्र राय, श्री विजय बत्रा, श्रीमती डॉ. चंद्रप्रभा शास्त्री जी इत्यादि महानुभावों को सम्मानित किया गया। प्रधान जी ने सबका धन्यवाद किया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के अन्तर्गत
वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
वैदिक साहित्य
अब
amazon
पर भी उपलब्ध
अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें
bit.ly/VedicPrakashan
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 011-23360150

निर्वाचन समाचार

आर्यसमाज मन्दिर राज नगर पार्ट-II पालम कालोनी, दिल्ली-77

प्रधान : श्री धर्मपाल आर्य
मंत्री : श्री रतन आर्य
कोषाध्यक्ष: श्री बाबू लाल आर्य

हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

आर्योद्देश्यरत्नमाला पद्यानुवाद

निर्गुणोपासना-सदगुणोपासना

27-निर्गुणोपासना

स्पर्श, रूप, रस, गन्ध,
ध्वनि या संयोग-वियोग ।
हल्का, भारी, अज्ञता,
जन्म-मरण दुःख-योग ।।34।।
इत्यादि गुण - हीन प्रभु
की उपासना रीति ।
उसको 'निर्गुण' जानिए
वेदों की यह नीति ।।35।।

28-सगुणोपासना

नित्य शुद्ध, सर्वज्ञ जो
प्रभु आनन्दस्वरूप ।
सर्वव्यापक, एक है सत्य,
सनातन भूप ।।36।।
कर्त्ता, धर्त्ता जगत का
सर्वशक्ति का केन्द्र ।
मंगलमय, आनन्दप्रद,
अन्तर्यामि बुधेन्द्र ।।37।।
त्यागी, सदा दयालु जो
सत्य गुणों की खान ।
'सगुणोपासन' के लिए
गुणी रूप भगवान ।।38।।

साभार :
सुकवि पण्डित ओंकार मिश्र जी द्वारा पद्यानुवादित पुस्तक से

प्रेरक प्रसंग

विवाह संस्कार के समय बिल्ली फेंक दी

युग कैसे बदला?

बम्बई के विख्यात आर्यसमाजी दार्शनिक स्व. ईश्वरचन्द्रजी दर्शनाचार्य ने जात-पात के बन्धन तोड़कर विवाह किया। यह आज से साठ वर्ष पुरानी बात होगी। पौराणिकों से यह सहन न हो सका। वे लोग इसे धर्म-घात मानते थे। कन्या के पिता को पौराणिकों ने समझाया और डराया भी, परन्तु वे अपने निश्चय से न टले। जब विवाह-संस्कार हो रहा था तो जले-भुने पौराणिकों ने छत से मण्डप में बिल्ली फेंक दी, परन्तु यह विवाह फिर भी होके ही रहा।

आज की पीढ़ी इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकती कि आर्यसमाज के पुराने लोगों ने रूढ़ियों, कुरीतियों का उन्मूलन करने के लिए कितने दुःख व कष्ट झेले हैं। हम नई पीढ़ी के लोगों के सामने इतिहास का एक पृष्ठ रखते हैं। महर्षि दयानन्द की बलिदान अर्ध शताब्दी अजमेर में मनाई गई। तब कई लोगों ने जात-पात तोड़कर रिश्ते-नाते करने का संकल्प किया।

ऐसे लोगों में आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् आचार्य भद्रसेनजी अजमेर निवासी भी थे। राजस्थान के एक आर्यसज्जन ने अपनी ज्येष्ठ पुत्री का सम्बन्ध आचार्य जी से करने का निश्चय किया। आचार्य जी मातृ-पितृ विहीन थे। उनकी बारात में कौन जाएगा? आर्यसमाज के कई मूर्धन्य विद्वान्, वेदवेत्ता, कवि, नेता इस बारात में गये। विवाह का निमन्त्रण-पत्र है। वेदोपदेश, शंका-समाधान, भजन, शास्त्रार्थ आदि सब कार्यक्रम रखे गये।

बारात कन्या के द्वार पर जा पहुँची। कन्या के पिता पर बिरादरी का बड़ा दबाव पड़ा। यह विवाह रोक दो। बिरादरी से बहिष्कृत करने की धमकी ने रंग दिखाया। कन्या का पिता बारात लौटाने के लिए तैयार हो गया, परन्तु कन्या की माता अड़ गई और पति से कहा, 'डरो मत, अब तो सम्बन्ध इसी युवक से होगा।' कन्या के पिता ने अद्भुत साहस दिखाया। विवाह हो गया, परन्तु पाठक सोचें कि कन्या के माता-पिता को तब कितनी मानसिक पीड़ा दी गई होगी। इससे बढ़कर वह महोदय की स्थिति में अपने को रखकर सोचिए कि यदि विवाह न होता तो उसका मान-सम्मान धूल में मिल जाता।

इससे भी बढ़कर विचित्र स्थिति उन बारातियों की थी। वे कोई साधारण स्थिति के व्यक्ति न थे। आर्यसमाज के जाने-माने विद्वान्, नेता व साहित्यकार इनमें थे। इनमें से कुछ विभूतियो देशभर में विख्यात थीं। बारात को बैरंग लौटना पड़ता तो इनके पल्ले क्या रहता? इन सज्जनों के नाम भी हम यहां दे देते हैं-

कविरत्न प्रकाश चन्द्रजी, पण्डित जयदेव जी वेदभाष्याकार, प्रो. घीसूलालजी, डॉ. सूर्यदेवजी, पण्डित जियालालजी, पूज्य पण्डित ब्रह्मदत्तजी 'जिज्ञासु', पूज्य स्वामी लक्ष्मणानन्दजी महाराज, श्रीरामसहायजी (स्वामी श्री ओमभक्तजी) आदि।

पाठक कन्या के पिता का नाम जानने को बड़े उत्सुक होंगे। उस धर्मवीर का नाम था रामनारायणजी रघुनाथ आर्य। ऐसे साहसी आर्यपुरुष को हम कदापि नहीं भूल सकते। बुराईयों से भिड़ने वाले प्रत्येक मनुष्य के लिए ऐसे आर्यवीर का सत्साहस एक उदाहरण है। भले ही वह कोई नेता और साधन-सम्पन्न व्यक्ति न थे, परन्तु निश्चय ही वे नींव का एक पत्थर थे। हम ऐसे धर्मवीरों के ऋण से अनृण नहीं हो सकते। आज जात-पात के बन्धन की कड़ियां तोड़ना कोई कठिन कार्य नहीं है परन्तु 1933 ई. में यह सुधार कार्य नहीं था, प्रत्युत क्रान्तिकारी कार्य था।

-प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

पृष्ठ 4 का शेष

आर्य समाज के सेवा कार्यों की प्रगति में अपना योगदान देते रहे और सभी सेवा प्रकल्पों का अवलोकन करते रहें। प्रधान जी ने पुन: सभी का धन्यवाद किया और श्री डी. पी. अग्रवाल की टी.सी.आई. कंपनी के विश्व स्तरीय सेवा कार्यों के लिए उन्हें विशेष रूप से बधाई दी। श्री विनय आर्य जी ने अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के सेवा कार्यों का विस्तृत वर्णन करते हुए बताया कि आर्य समाज वनवासी क्षेत्रों में चार स्तरों पर विशेष कार्य कर रहा है, जिनमें बालवाड़ी, छात्रावास, गुरुकुल, कन्या गुरुकुल 13 राज्यों के जंगलों में हम मानव निर्माण का कार्य कर रहे हैं। इसके बाद वहां के बच्चों को दिल्ली में लाकर आर्य समाजों में संचालित गुरुकुल में रखकर अच्छे विद्यालयों में शिक्षा देते हैं। इनके भोजन, आवास, शिक्षा, चिकित्सा आदि की पूरी व्यवस्था आर्य समाज करता है। इसके बाद हम उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति वितरण योजना चलाते हैं, 12वीं के बाद बच्चों को आगे पढ़ने में सहायता करते हैं और यू.पी.एस.सी. की तैयारी के लिए हमारा आर्य प्रतिभा विकास संस्थान लगातार सफलता प्राप्त कर रहा है। जिसमें सुयोग्य बच्चों को दिल्ली में भोजन, आवास और निशुल्क कोचिंग की सुविधा प्रदान की जाती है। इस अवसर पर शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले विजेता बच्चों को प्रमाण पत्र भेंट किए गए और सभी ने प्रतिभागियों को आशीर्वाद और शुभकामनाएं देकर उनका उत्साहवर्धन किया। अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के प्रधान श्री सुरेंद्र कुमार आर्य जी को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया और श्रीमती सुषमा शर्मा जी और सभी उपस्थित महानुभावों को स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मानित किया गया। प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

-जोगेन्द्र खट्टर

महर्षि दयानन्द की प्रेरक शिक्षाएं

कर व्यवस्था के दोष– सरकार कागद (स्टाम्प) बेचती है। और बहुत सा कागजों पर धन बढ़ा दिया है इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है। सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं क्योंकि इसके होने से बहुत गरीब लोग दु:ख पाकर बैठे रहते हैं। कचहरी में बिना धन के कोई बात होती नहीं। इससे कागजों के ऊपर जो बहुत धन लगाना है सो मुझको अच्छा मालूम नहीं देता। इसको छोड़ने से ही प्रजा में आनन्द होता है।

–सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण- पृष्ठ- 348)

श्रीकृष्ण के प्रति महर्षि के विचार– देखो! श्रीकृष्ण का इतिहास महाभारत में अत्युत्तम है। उनका गुण, कर्म, स्वभाव, चरित्र आप्त पुरुषों के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्रीकृष्ण ने जन्म से मरणपर्यन्त बुरा काम किया हो, ऐसा नहीं लिखा। और भागवत में दूध, दही, मक्खन की चोरी, कुब्जादासी से समागम, परस्त्रियों से रासमण्डल, क्रीडा आदि मिथ्या दोष श्रीकृष्ण में लगाये हैं। इसको पढ़-पढ़ा-सुन-सुना के अन्य मतवाले श्रीकृष्ण की बहुत सी निन्दा करते हैं। जो यह भागवत न होता तो श्रीकृष्णजी के सदृश महात्माओं की झूठी निन्दा क्यों होती?

–सत्यार्थ प्रकाश 11वाँ समुल्लास

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

इस स्तम्भ में उन महानुभावों का परिचय प्रकाशित किया जा रहा है जो किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बनें हों। यदि आपके साथ भी कुछ ऐसा हुआ है तो आप भी अपना प्रेरक प्रसंग अपने फोटो के साथ लिखें अपने आर्यसमाजी बनने की कहानी और भेज दें aryasabha@yahoo.com पर ईमेलं। आप हमें अपनी कहानी और फोटो डाक द्वारा भी भेज सकते हैं।
हमारा पता है– **सम्पादक, आर्य सन्देश साप्ताहिक, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001**

वैदिक सत्संग सभा सेक्टर–11 रोहिणी द्वारा 19वां वार्षिकोत्सव संपन्न

वैदिक सत्संग सभा रोहिणी सेक्टर 11 द्वारा तीन दिवसीय वार्षिक उत्सव में आचार्य आर्य नरेश जी के वैदिक प्रवचन, पंडित दिनेश पथिक जी के मधुर भजन और आचार्य शिव नारायण शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ संपन्न हुआ। 3 दिनों तक चलने वाले कार्यक्रम में सुबह का प्रातः रास, रात्रि का भोजन और पूर्णाहुति पर ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्रीय आयोजनों के साथ-साथ श्री विनय आर्य जी, महामंत्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, श्री सतीश चडडा जी, महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा, श्री सुरेंद्र चौधरी जी, मंत्री आर्य केंद्रीय सभा और आर्य वीर दल के आर्यवीर और वीरांगना उपस्थित रहे। प्रेम पूर्ण सौहार्द के वातावरण में संपूर्ण कार्यक्रम प्रेरक और सफल सिद्ध हुआ।

-राकेश कुमार आहूजा

पृष्ठ 2 का शेष

बदलने का उद्गम स्थल बने। आज नए संसद भवन को देखकर हर भारतीय गौरव से भरा हुआ है। इस भवन में विरासत भी है, वास्तु भी है। इसमें संस्कृति भी है और संविधान के स्वर भी हैं। ये संसद भवन हर भारतीय के कर्तव्य भाव को जागृत करेगा।

अब हम यहां विरोधियों को कहना चाहते हैं कि 24 अक्टूबर 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने संसद के एनेक्सी भवन का उद्घाटन किया था। 15 अगस्त, 1987 को उस समय के प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने संसदीय पुस्तकालय का शिलान्यास किया था। ज्ञात हो कि इन दोनों कार्यक्रमों में राष्ट्रपति को आमंत्रित नहीं किया गया था। इसी तरह कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों ने अपने नए विधनसभा का उद्घाटन और शिलान्यास किया है, यह बातें तो पुरानी हो गई हैं, 2020 में छत्तीसगढ़ में नई विधानसभा का शिलान्यास हुआ था। क्या उसमें राज्यपाल को आमंत्रित किया गया था? वहां की कांग्रेस सरकार ने सोनिया गांधी और राहुल गांधी को शिलान्यास के लिए आमंत्रित किया था।

अब सवाल यह उठता है कि सोनिया गांधी ने किस संवैधानिक अधिकार के साथ नए विधानसभा का शिलान्यास किया था? इस तरह के अनेक उदाहरण कांग्रेस की कथनी और करनी के फर्क को स्पष्ट करते हैं। यह भी हैरानी की बात है कि लोकतंत्र और संविधान की बात वो कांग्रेस कर रही, जिसने देश पर आपातकाल थोपकर संविधान को रौंद दिया था, लोकतंत्र के दीपक को बुझा दिया था। संसद की गरिमा की बात वह कांग्रेस कर रही है, जिसके तत्कालीन सांसद और राष्ट्रीय उपाध्यक्ष ने अपनी ही सरकार द्वारा संसद में लाए गए अध्यादेश को फाड़ दिया था। दरअसल, इन सारे विरोध का मूल है प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के विरोध की आतुरता, विरोध के लिए विरोध की नकारात्मक प्रवृत्ति। इसमें कोई दो मत नहीं है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कांग्रेस समेत कई राजनीतिक दलों की आखों में खटकते रहते हैं। आज नरेंद्र मोदी एक वैश्विक नेता के तौर पर पहचाने जा रहे हैं, ग्लोबल रेटिंग में वह विश्व के नेताओं के बीच सबसे अधिक लोकप्रिय हैं। आज तक नरेंद्र मोदी कोई चुनाव नहीं हारे, भारतीय लोकतंत्र की सभी कसौटियों और परीक्षाओं में पर वह खरे उतरे हैं, लोकसभा के दो चुनावों में उनके करिश्माई नेतृत्व के कारण उनकी पार्टी विजयी हुई है। फिर प्रधानमंत्री नए संसद भवन का उद्घाटन क्यों ना करें? प्रधानमंत्री हमारे शासन व्यवस्था का सर्वोच्च प्रधान होता है, ऐसे में विपक्ष का अनर्गल प्रलाप उनकी राजनीतिक रणनीति का एक हिस्सा भर है।

एक आम भारतीय को विपक्ष के इस वितंडा से कोई लगाव नहीं है, बल्कि वह तमाम विरोधी दलों के इस नकारात्मक विरोध शैली को देखकर हैरान है। विदेश दौरे से वापस आए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी सिडनी में हुए कार्यक्रम का उदाहरण देते हुए विपक्ष को नसीहत दी। उन्होंने कहा कि भारतीय समुदाय के कार्यक्रम में वहां सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों दलों के नेता मौजूद थे। इशारों में प्रधानमंत्री ने वहां के लोकतांत्रिक वातावरण का जिक्र करके विपक्ष को लोकतांत्रिक शिष्टाचार का पाठ पढ़ाया है।

हम ऐसा विचार कर रहे थे कि 28 मई 2023 को नये संसद भवन के उद्घाटन के सुनहरे अवसर पर अच्छा होता कि सभी राजनीतिक दल लोकतंत्र के नए मंदिर में संवाद की नई धारा, लोक केन्द्रित विमर्श और लोकतांत्रिक मर्यादा के उच्च शिखर के पालन करने का संकल्प लेते हुए उद्घाटन कार्यक्रम में शमिल होते तथा विश्व को भारत के जीवंत लोकतांत्रिक मूल्यों एवं आदर्शों का सन्देश देते। लेकिन हमें लगता है कि विपक्ष द्वारा यह केवल नये संसद भवन और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का ही विरोध मात्र नहीं था, बल्कि नये संसद भवन से ज्यादा राष्ट्रवाद की भावनाओं का विरोध था। आर्य समाज की ओर से नये संसद भवन के उद्घाटन की सभी देशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं। ईश्वर से हमारी यही प्रार्थना है कि लोकतंत्र के इस मंदिर में हमारे जनप्रतिनिधि राष्ट्र निर्माण और मानव कल्याण की उन समस्त कल्पनाओं को साकार करें जिनसे भारत का मस्तक ऊंचा हो और हमारा देश अपनी विश्व गुरु की पहचान को पुनः प्राप्त करें।

-संपादक

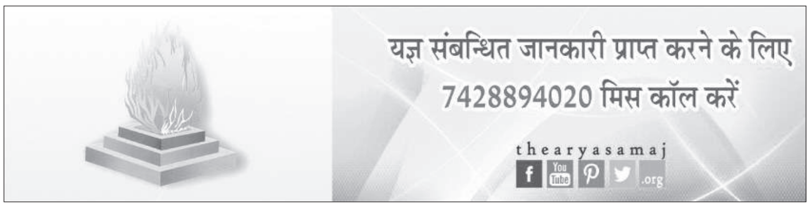

शोक समाचार

श्रीमती सीताकोर जी का निधन

आर्य समाज के समर्पित कार्यकर्ता एवं लेखक श्री तेजपाल धामा जी की पूज्या माता श्रीमती सीताकोर जी का 26 मई 2023 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 5 जून 2023 को पट्टी गिरधर पुर, खेकड़ा, बागपत में होगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सदगति एवं शोक-संतप्त व परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करें। -संपादक

सोमवार 29 मई, 2023 से रविवार 04 जून, 2023
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि. नं० डी. एल. (एन. डी.)- 11/6071/2021-22-2023
LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 31-01-02 जून, 2023 (बुध-वीर-शुक्रवार)
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-2023
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथिः बुधवार 31 मई, 2023

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश द्वारा दिल्ली आर्य वीर दल, दिल्ली प्रदेश की महिला प्रांतीय इकाई के तत्वावधान में

चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 05 जून से 11 जून 2023

स्थानः– रघुमल आर्य कन्या सीनियर सेकेण्ड्री स्कूल राजाबाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली–110001

उदघाटन :– 05 जून 2023 सायं 5 बजे

समापन समारोहः– 11 जून 2023 सायं 4 बजे

शिविरार्थियों हेतु निर्देशः ❖ शिविरार्थियों की आयु 11 वर्ष से अधिक हो। ❖ शिविर शुल्क 500/- रुपये प्रति शिविरार्थी होगा। ❖ शिविरार्थी अपने नाम दो दिन पूर्व भेजें ❖ शिविरार्थी अपने साथ कोई कीमती सामान न लाएं। ❖ शिविरार्थी भोजन के लिए थाली, गिलास, चम्मच, कटोरी, ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाएं। ❖ शिविरार्थी दो जोड़ी सफेद सलवार-कमीज, केसरिया दुपट्टा, सफेद पी.टी.शूज तथा दो पासपोर्ट साइज फोटो साथ लाएं। ❖ सभी शिविरार्थी 5 जून, 2023 प्रातः 11 बजे तक शिविर स्थल पर अवश्य पहुंच जाएं।

निवेदक

शारदा आर्या संचालिका 9971447372	स्नेह भाटिया सहसंचालिका 9999642155	आचार्या अमृता महा मंत्राणी 8377086028	अंजली आर्या कोषाध्यक्षा 7738630190
लिपिका आर्या बैद्धिकाध्यक्षा 9811203087	संजय सिंह अध्यक्ष 9811095321	रश्मी वर्मा मैनेजर 9971045191	

पर्यावरण शुद्धि यज्ञ हेतु निःशुल्क घी व हवन सामग्री

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून को यज्ञ करने हेतु श्री वेद प्रकाश वानप्रस्थी (आर्य समाज शकर पुर, दिल्ली–92) की ओर से दो किलो सामग्री और एक किलो घी निःशुल्क प्रदान किया जा रहा है। जो आर्य समाजें घी और सामग्री प्राप्त करना चाहें वे सायं 3 से 6 बजे तक आर्य समाज मन्दिर डी–110 शकर पुर, दिल्ली–92 पहुंचकर प्राप्त कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए **मोबाईल न. 9540942767 पर संपर्क करें।**

ओ३म्

असंख्य लोगों का जीवन बदलने वाला अमर ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न संस्करण विविध आकार-प्रकार में उपलब्ध हैं।
प्रस्तुत संस्करण की विशेषता :
सुंदर, आकर्षक, स्पष्ट छपाई , सस्ता पॉकेट संस्करण

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph : 011-43781191, 09650522778
E-Mail : aspt.india@gmail.com

सह प्रकाशक
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001
Ph : 011-23360150, 23365959

सत्यार्थ प्रकाश का स्वयं स्वाध्याय करें, दूसरों को प्रेरित करें और अपने इष्ट मित्रों को उपहार स्वरूप भेंट कर इसके प्रचार प्रसार में सहभागी बनें।

Available on vedicprakashan.com and amazon
bit.ly/vedicprakashan

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

प्रतिष्ठा में,

पृष्ठ 1 का शेष

वनवासी आर्य कार्यकर्ता बनेंगे भारतीय संस्कृति के अग्रदूत

को स्वामी दयानंद सरस्वती जी ने दुनिया में पहुंचाया। उनकी वैदिक विचारधारा में हर तरह की चुनौतियों का समाधान करने की सामर्थ्य शक्ति है और यह सामर्थ्य शक्ति हर तरह की कठिनाइयों में मनुष्य को समाधान का रास्ता दिखाती है। अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ वनवासी बच्चों को स्वामी दयानंद की उसी ज्ञानधारा से प्रशिक्षण देकर हर तरह की चुनौतियों से समाधान की शिक्षा दे रहे हैं। आप सभी बच्चे सौभाग्यशाली हैं, आपका शिक्षण हो रहा है, प्रशिक्षण हो रहा है, वैदिक संस्कृति का ज्ञान आपको प्राप्त हो रहा है, आप वैदिक विज्ञान से पढ़कर निकलेंगे और आने वाले समय में भारतीय संस्कृति के अग्रदूत बनेंगे। वैदिक ज्ञान से ही समाज में नया परिवर्तन आएगा। इस अवसर पर सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी, उपप्रधान विनय आर्य जी, श्री अर्जुन देव चड्ढा जी, श्री अरुण प्रकाश वर्मा जी आदि महानुभावों सहित सैकड़ों वनवासी आर्य कार्यकर्ता और आर्यजन उपस्थित थे। आर्य समाज की ओर से श्री बिरला जी का सम्मान किया गया और बिरला जी ने अपने यहां पधारने पर सबका आभार व्यक्त किया।

–जोगेन्द्र खट्टर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व संपादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा विद्या दर्शन ऑफसैट प्रिंटर्स, यूनिट नं.-21, प्रधान कॉम्पेक्स, मेन रोड मंडावली, दिल्ली-92 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001, फोनः 23360150, 23365959, E-mail : aryasabha@yahoo.com, Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
● सम्पादकः धर्मपाल आर्य ● सह सम्पादकः विनय आर्य ● व्यवस्थापकः शिवकुमार मदान ● सह व्यवस्थापकः आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह